शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 दिसम्बर 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

शब्दब्रह्म के ग्यारह वर्ष

डॉ.पुष्पेंद्र दुबे

शब्दब्रह्म ने अपने प्रकाशन के ग्यारह वर्ष पूर्ण कर लिए हैं और वह बारहवें वर्ष में प्रवेश कर गया है। इतनी लम्बी यात्रा आप सभी के सहयोग के बिना संभव नहीं थी। हिन्दी भाषा, साहित्य और मानविकी के विषयों को समर्पित ऑनलाइन ई-जर्नल में अभी तक विविध विषयों से संबंधित लगभग 1000 शोध पत्र प्रकाशित हुए हैं। इस बीच शब्दब्रह्म ने दो शोध संगोष्ठियां आयोजित कीं, जिसकी शोधार्थियों ने काफी सराहना की। शब्दब्रह्म में प्रकाशित शोध पत्रों ने अनेक शोधार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र की उच्च उपाधि पीएचडी प्राप्त करने में सहायता प्रदान की है। इतना ही नहीं अनेक शोधार्थी उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सहायक प्राध्यापक पद पर नियुक्त हुए। शब्दब्रह्म में प्रकाशित स्तरीय शोध पत्रों की अनेक विद्वानों ने न सिर्फ सराहना की है, बल्कि उसे राष्ट्रीय स्तर की शोध संगोष्ठियों, पुनश्चर्या पाठ्यक्रमों में रेखांकित भी किया गया है। शब्दब्रह्म में प्रकाशित शोध पत्र गूगल स्कॉलर पर संदर्भित किए जा रहे हैं। शब्दब्रह्म में प्रकाशित शोध पत्रों ने शोधार्थियों को अपना पीएचडी का विषय चयन करने में भी सहायता प्रदान की है। कोराना काल के कठिन दौर में एक बार लग रहा था कि इसे आगे जारी रखना संभव नहीं हो पाएगा, परंतु शोधार्थियों ने अपनी स्नेह वर्षा से इसे निरंतर प्रकाशित करने में सहयोग दिया। उनके प्रति शब्दब्रह्म परिवार हार्दिक आभार व्यक्त करता है।

शब्दब्रह्म अन्य शोध पत्रिकाओं से इस मायने में भिन्न है कि इसने शोध पत्र के प्रकाशन के लिए कोई पूर्व निर्धारित शर्त नहीं रखी है। केवल इतना ही आग्रह रखा है कि शोध पत्र मौलिक होना चाहिए। शब्दब्रह्म को इस बात की प्रसन्नता है कि इसने शोध पत्र लेखन के लिए भी अनेक शोधार्थियों को मार्गदर्शन प्रदान किया है, जो अनेक शोध पत्रिकाओं से इसे भिन्नता प्रदान करता है। विज्ञान और तकनीक के जमाने में कृत्रिम बौद्धिकता ने कमोबेश सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया है, शोध का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। अभी केवल थोड़ी-सी झलक दिखायी दे रही है। जब यह तकनीक अपने पूरे जोरों पर होगी, तब मनुष्य इसके प्रति कैसा व्यवहार करेगा, यह भविष्य के गर्त में छिपा है। चैट जीपीटी जैसी तकनीक का उपयोग शोध पत्र लेखन में हो रहा है, जिसके प्रति वैज्ञानिकों ने अपनी चिंता जाहिर की है। कृत्रिम बौद्धिकता की ईजाद करने वाले वैज्ञानिक स्वयं इसे खतरनाक निरूपित कर चुके हैं, परंतु इसे रोकना किसी के बूते की बात नहीं है। मनुष्य अपने विवेक को इससे उच्च स्तर पर ले जाकर ही तकनीक से मुकाबला कर सकेगा। विवेक जाग्रति में अध्यात्म से बढ़कर और कौन-सा साधन हो सकता है। बाहर की दुनिया में जितना विज्ञान ने विस्तार किया है, मनुष्य को उससे कहीं अधिक गहराई में अपने भीतर उतरना होगा, तभी वह इस तकनीक को मनुष्य मात्र की भलाई में उपयोग करने में सक्षम होगा। कहने का तात्पर्य यह है कि वैज्ञानिकों को यथाशीघ्र आध्यात्मिकों के साथ अपना संवाद स्थापित कर लेना चाहिए, जिससे पृथ्वी के भविष्य को सुरक्षित किया जा सके। शब्दब्रह्म को आप सुधी शोधार्थियों का सहयोग इसी प्रकार प्राप्त होता रहेगा। नववर्ष की सभी को हार्दिक शुभकामनाएं।